अंदमान और निकोबार द्वीप समूह में आर्थिक और वित्तीय विकास *

दीपक मोहन्ती

इस विशिष्ट सभा में व्याख्यान देने के लिए अंदमान चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्री ने मुझे आमंत्रित किया उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ। बंगाल की खाड़ी में स्थित अत्यंत सुंदर केंद्र शासित प्रदेश अंदमान और निकोबार द्वीप समूह देश के 0.25 प्रतिशत हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है लेकिन देश की जनसंख्या में उसका हिस्सा केवल 0.03 प्रतिशत है। यह इसे दर्शाता है कि 382 प्रति वर्ग किलोमीटर अखिल भारतीय जनसंख्या के स्तर के मुकाबले अंदमान निकोबार द्वीप समूह का 46 प्रति वर्ग किलोमीटर का जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक कम क्यों है। उच्च शैक्षिक दर और प्रति व्यक्ति आय अंदमान निकोबार द्वीप समूह को सामाजिक-आर्थिक विकास के स्तर पर देश का एक अग्रणी केंद्र शासित प्रदेश बनाती है। इसके अतिरिक्त, जैविक-विविधता से परिपूर्ण अपने भू-दृश्य की हरीतिमा और पर्यावरण सम्बद्ध पर्यटन के आकर्षक-स्थलों के कारण यह पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है। इन सामाजिक-भौगोलिक खूबियों के बावजूद अंदमान निकोबार द्वीपसमूह के सम्मुख अनेक विकासात्मक चुनौतियाँ है - विशेषकर दिसम्बर 2004 में सुनामी आने के बाद जिससे कि बड़े पैमाने में नुकसान हुआ, अनेक विकासात्मक चुनौतियाँ है।

सतत आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक और मानव संसाधन की समृद्धि के अलावा यह भी जरूरी है कि एक अच्छी तरह से कार्यरत वित्तीय व्यवस्था मौजूद हो। इसे स्वीकार करते हुए रिज़र्व बैंक ने समाज में खुशहाली के स्तर को बढाने दिशा में औपचारिक वित्तीय क्षेत्र की पैठ को बढ़ाने और वित्तीय समावेशन को और विकसित करने के लिए हाल के वर्षों में अपने प्रयासों को और तेज किया है। इस संबंध में रिज़र्व बैंक राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में बैंकिंग सुविधाओं के विस्तार के लिए विशेष किस्म के अभिनव प्रयास कर रहा है। इस पृष्ठभूमि में मैं केन्द्र शासित प्रदेश अंदमान निकोबार द्वीप समूह की आर्थिक व वित्तीय संरचना और साथ ही वित्तीय समावेशन के लिए रिज़र्व बैंक द्वारा किये गये विभिन्न अभिनव प्रयासों की संक्षिप्त रूपरेखा आपके सामने रखना चाहता हूँ। निष्कर्ष में मैं कुछ मुद्दों को भी रेखांकित करना चाहता हूँ जिन पर नीतिगत ध्यान देने की आवश्यक है।

पृष्ठभूमि

अंदमान व निकोबार भू-भाग, जो कि 1956 से केन्द्र शासित प्रदेश है, 572 द्वीपों (306 द्वीप और 266 चट्टान) का समूह है और इसका भौगोलिक क्षेत्र 8, 249 वर्ग किलोमीटर है। इन द्वीपों में केवल 38 पर आबादी है। यह केन्द्र शासित प्रदेश मत्स्य-पालन उद्योग की भारी संभावनाओं से युक्त होने के अलावा प्रचुर हरियाली और समुद्री सम्पदा से भी सम्पन्न है। इनमें भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध भू-मध्य रेखीय जंगल हैं और साथ ही नेग्रोइड और मोंगोलोइड मूल की देसी जनजातियों की रिहाइश है। इसकी वैविध्यपूर्ण कच्छ-वनस्पति को वैश्विक वन्य जीवन निधि (डब्ल्यू डब्ल्यू एफ) द्वारा विश्व के 200 सर्वाधिक प्राथमिकता प्राप्त जैविक-विविधता वाले 'महत्वपूर्ण स्थलों' की सूची में शामिल किया गया है। इतना ही नहीं, इन द्वीप समूहों को यूनेस्को द्वारा निर्धारित जीव-मंडल आरक्षण/क्षेत्र (भारत-मलेशियाई जैव-भौगोलिक क्षेत्र) में शामिल किया गया है।

भारतीय वन सर्वेक्षण (2005) के अनुसार अंदमान निकोबार द्वीप समूह का कुल 87 प्रतिशत हिस्सा वन-आच्छादित है और केवल 50,000 हेक्टर भूमि कृषि तथा उससे जुड़ी गतिविधियों के लिए उपलब्ध है जो विभिन्न द्वीपों में बँटी हुई है। वर्तमान में प्रमुख फसलें धान, नारियल, सुपारी, सब्जियाँ और फल की हैं। अंदमान निकोबार द्वीपों का कुल तटीय क्षेत्र 1,912 किलोमीटर है, जो कि भारत के समग्र तटीय क्षेत्र का एक चौथाई है। द्वीपों के चारों ओर का अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) लगभग 0.6 मिलियन वर्ग किलोमीटर का है जो कि भारत के समग्र अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) का 30 प्रतिशत है। यह मत्स्यपालन और अन्य समुद्री संसाधनों के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान करता है।

विशेष संकेतक

2011 की जनगणना के अनुसार 6.7 प्रतिशत दशकीय वृद्धि के साथ अंदमान निकोबार द्वीपसमूह की कुल जनसंख्या लगभग 0.38 मिलियन है। अंदमान निकोबार द्वीपों के तीन जिले, अर्थात,

* दीपक मोहन्ती, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा पोर्ट ब्लेयर में 22 दिसम्बर 2011 को अंदमान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इन्डस्ट्री में दिया गया व्याख्यान। इस संबंध में डॉ. पी.के. नायक और श्री सूरज एस. से मिले सहयोग के लिए आभार प्रकट किया जाता है।

दक्षिण अंदमान जिला, उत्तरी और मध्य अंदमान जिला और निकोबार जिला हैं। इस केंद्र शासित प्रदेश की 88 प्रतिशत से अधिक आबादी पहले दो जिलों में बसी हुई है जिनमें 37 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। निकोबार जिले में शहरी क्षेत्र नहीं है। उत्तरी और मध्य अंदमान तथा दक्षिणी अंदमान जिले में आबादी में लिंग संबंधी अनुपात 2001 के 884 और 824 से बढ़कर 2011 में क्रमशः 925 और 874 हो गया है। निकोबार द्वीप समूह में लिंग संबंधी अनुपात 2001 के 857 से घटकर 2011 में 778 हो गया है। अंदमान निकोबार द्वीपों में आबादी की सघनता 2001 के प्रति वर्ग किलोमीटर 43 से बढ़कर 2011 में प्रति वर्ग किलोमीटर 46 हो गयी है। द्वीप समूह में 2011 में अखिल भारतीय 74.0 साक्षरता प्रतिशत के मुकाबले साक्षरता का प्रतिशत 86.3 था (सारणी 1)।

समष्टि आर्थिक संरचना

केन्द्र शासित प्रदेश अंदमान निकोबार की प्राकृतिक संसाधन समृद्धि को देखते हुए इसके विकास की बड़ी संभावनाएं हैं। तथापि, इन द्वीपों का देश की मुख्य भूमि से तुलनात्मक रूप से अलग-थलग होना, कठिन संचार व्यवस्था और निविष्टियों के लिए सरकार पर भारी निर्भरता तथा स्थानीय बाजार का आधार बहुत छोटा होना कुछ ऐसे ऐसी प्रमुख प्रतिकूल स्थितियाँ हैं जो तीव्र विकास को हासिल करने में अवरोध पैदा करती हैं।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के समान ही पिछले एक दशक में अंदमान निकोबार द्वीप समूह की अर्थव्यवस्था भी महत्वपूर्ण ढाँचागत रूपान्तरण से होकर गुजरी है। प्राथमिक क्षेत्र का वर्चस्व कम हुआ है और भू-भागीय क्षेत्र का हिस्सा बढ़ा है। प्राथमिक क्षेत्र के हिस्से में गिरावट आने का आंशिक कारण यह है कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार अब वन्य लकड़ी की कटाई में गिरावट आयी है। इसके अलावा, सुनामी के कारण भूमि का एक हिस्सा जलमग्न हो गया है जिसके कारण कृषि उत्पाद कम हुआ है। सेवा क्षेत्र में वृद्धि का कारण सुनामी के बाद के समय में पुनर्वास संबंधी कदमों के रूप में निर्माण कार्यों का बढ़ना और सरकारी व्यय में हुई वृद्धि है। औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा कमोबेश स्थिर रहा है।

केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) से प्राप्त सूचना के अनुसार 2009-10 में अंदमान निकोबार द्वीप समूह की प्रति व्यक्ति आय (एनएसडीपी) अखिल भारतीय प्रति व्यक्ति आय से 62 प्रतिशत अधिक थी। तथापि, 2009-10 के दौरान अंदमान निकोबार द्वीपों में एनएसडीपी में 2.7 प्रतिशत की गिरावट आयी जो मुख्यतया औद्योगिक और कृषि क्षेत्रों की विकास दर में आयी तीव्र गिरावट के कारण थी। पर विकास दर में इस गिरावट के बावजूद 2000 के दशक के उत्तरार्द्ध में औसत वार्षिक वृद्धि दर में सुधार हुआ और यह पहले 6 महीनों के 6 प्रतिशत की तुलना में उत्तरार्द्ध में लगभग 10 प्रतिशत थी। अंदमान निकोबार द्वीप समूह की एनएसडीपी की औसत वृद्धि दर 2005-10 की अवधि में अखिल भारतीय एनडीपी से सामान्यतया अधिक रही (चार्ट-1)।

2005-10 के दौरान अंदमान निकोबार द्वीप समूह की एनएसडीपी की औसत विकास दर में वृद्धि मुख्यतया औद्योगिक और सेवा क्षेत्र के कारण हुई। औद्योगिक क्षेत्र में 2000 के दशक के पूर्वार्द्ध के दौरान 1.5 प्रतिशत की निम्न वृद्धि दर में तेजी से सुधार हुआ और दशक के उत्तरार्द्ध में वह 12.4 प्रतिशत हो गयी। तथापि, यह देखा गया है कि इस पूरे दशक के दौरान इस क्षेत्र की वृद्धि दर बहुत अधिक अस्थिर रही है। कृषि क्षेत्र में 2000-05 की अवधि में

सारणी 1 : अंदमान और निकोबार द्वीप समूह : चयनित सामाजिक-आर्थिक संकेतक

मद	यूनिट	अंदमान व निकोबार द्वीप समूह	अखिल भारतीय
1	2	3	4
भौगोलिक क्षेत्र	वर्ग कि.मी	8,249	3,287,263
जनसंख्या	मिलियन	0.38	1,210
प्रति व्यक्ति आय (2004-05 की कीमतों पर 2009-11 में)	रुपया	54,830	33,731
आबादी की सघनता	प्रति वर्ग कि.मी.	46	382
जनसंख्या में दशकीय वृद्धि (2001-2011)	प्रतिशत	6.7	17.6
लिंग अनुपात	प्रति 1000 पुरुषों में स्त्रियाँ	878	940
साक्षरता	प्रतिशत	86.3	74.0

स्रोत : भारत का सर्वेक्षण 2011

चार्ट 1 : अंदमान निकोबार की एनएसडीपी वृद्धि (2004-05 की कीमतों पर)

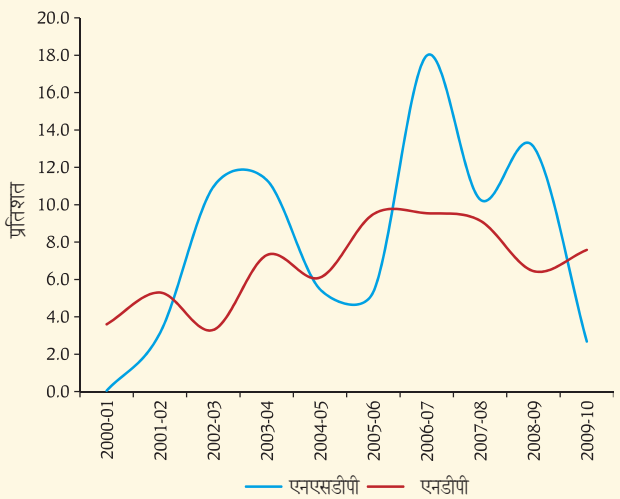

सारणी 2 : क्षेत्र-वार निवल घरेलू उत्पाद
(2004-05 की कीमतों पर)

(प्रतिशत में)

क्षेत्र	विकास दर			एनएसडीपी में हिस्सा		
	औसत	औसत		औसत	औसत	
	2000-05	2005-10	2009-10	2000-05	2005-10	2009-10
1. कृषि और सम्बद्ध गतिविधियाँ	**-3.2**	**3.7**	**-6.3**	**22.6**	**11.8**	**11.0**
इनमें से:						**(15.2)**
कृषि	2.2	-0.4	-11.6	16.2	8.3	7.2
II. उद्योग	**1.5**	**12.4**	**-7.4**	**2.5**	**2.7**	**2.6**
इनमें						**(16.5)**
(i) खनन और उत्खनन	-24.9	35.0	-7.7	1.1	0.6	0.5
(ii) विनिर्माण	-2.0	12.2	39.3	1.2	0.8	1.0
(iii) विद्युत, गैस और जल आपूर्ति	30.9	20.4	-29.9	0.8	1.3	1.1
III. सेवा क्षेत्र	**9.4**	**11.1**	**4.3**	**74.8**	**85.5**	**86.4**
इनमें						**(68.3)**
(i) निर्माण	38.5	19.4	40.8	14	31.7	33.2
(ii) परिवहन, भंडारण और संचार	2.7	7.9	-13.0	17.2	14.7	13.7
(iii) व्यापार, होटल और रेस्तरां	5.0	11.5	33.2	10.0	7.6	8.3
IV. राज्य घरेलू उत्पाद	**6.2**	**9.9**	**2.7**	**100.0**	**100.0**	**100.0**
मेमो मद:						
अखिल भारतीय एनडीपी वृद्धि (%)			7.6			
राज्य प्रतिव्यक्ति आय (₹)			54,830			
अखिल भारतीय प्रति व्यक्ति एन.एन.आई (₹)			33,731			

टिप्पणी : कोष्ठकों में दी संख्याएं अखिल भारतीय स्तर पर एनडीपी में विभिन्न क्षेत्रों के हिस्से को दर्शाती हैं।
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय

ऋणात्मक वृद्धि थी जिसमें पूरी तरह से परिवर्तन हुआ और वह 2005-10 के दौरान 3.7 प्रतिशत हो गयी (सारणी 2)।

वृद्धि के प्रेरणा स्रोत

देश की समग्र प्रवृत्ति के समरूप केंद्र शासित प्रदेश की आर्थिक गतिविधियों में भू-भागीय क्षेत्र की प्रमुखता है और उसका हिस्सा निरन्तर बढ़ रहा है। प्राथमिक क्षेत्र के हिस्से में गिरावट आ रही है और एनएसडीपी में अनुषंगी क्षेत्र का हिस्सा लगभग 3 प्रतिशत के स्तर पर स्थिर है। इस केंद्र शासित प्रदेश में शायद ही कोई अन्य विनिर्माण गतिविधि है। काष्ठ-संसाधन की जो गतिविधि है, वर्तमान में जंगल की कटाई पर प्रतिबंध के कारण अवरूद्ध है। भू-भागीय क्षेत्र के अन्तर्गत विनिर्माण गतिविधियाँ, परिवहन, भंडारण और संचार और सार्वजनिक प्रशासन वृद्धि के प्रमुख प्रेरणा-स्रोत रहे हैं।

कृषि

द्वीप समूह में औसत वर्षा का स्तर बहुत अधिक है और यह प्रति वर्ष अप्रैल-नवम्बर के आठ महीनों में होती है जो उष्ण कटीबंधीय आर्द्र जलवायु को पैदा करती है। इन द्वीपों की कृषि-जलवायु रोपने वाली फसलों जैसे कि नारियल व सुपारी; फलों जैसे कि केला, आम, अनन्नास, अमरूद, कटहल तथा गर्म मसालों जैसे कि लौंग, जायफल और काली मिर्च की उपज के लिए बहुत उपयुक्त है। भूमि में जल को रोकने की क्षमता कम है। इस द्वीप समूह में 2009-10 में बताये गये कुल 824,900 हेक्टर के भौगोलिक क्षेत्र में कृषि वाला क्षेत्रफल कुल 16,535 हेक्टर है (सारणी 3)।

प्रमुख फसलों में हालांकि धान का उत्पादन बढ़ा है, उसकी कुल उपज में गिरावट आयी है। नारियल का उत्पादन, जो कि उत्पादन के

सारणी 3 : 2009-10 के दौरान भूमि के उपयोग का ढाँचा

भूमि की किस्म	हेक्टर क्षेत्र
कुल भौगोलिक क्षेत्र	824,900
वन्य क्षेत्र	717,069
कुल कृषि क्षेत्र	16,535
बुआई का कुल क्षेत्र	14,710

स्रोत : अंदमान निकोबार द्वीप समूह का आर्थिक सर्वेक्षण, आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय

अधिकतम क्षेत्र में होता है, स्थिर रहा है। रोपने वाली अन्य फसलों का कार्यनिष्पादन मिलाजुला रहा है।

कृषि सर्वेक्षण 2005-06 के अनुसार परिचालनगत जोतों और साथ ही क्षेत्र में वृद्धि मुख्यतया 1 हेक्टर से कम की जोत वाले तथा कुछ कम हद तक 1 से 2 हेक्टर जोत वाले वर्ग के कारण है। संस्थागत भूमि मुख्यतया 10 से अधिक जोत वाले वर्ग के अन्तर्गत आती है। परिचालन गत जोतों का औसत आकार 2000-01 के 2 हेक्टर से घटकर 2005-06 में 1.88 हेक्टर हो गया है जो इस बात का संकेत है कि इस केंद्र शासित प्रदेश में भूमि जोतों का विखंडन बढ़ रहा है (सारणी 4)।

उद्योग

विनिर्मित पण्य के लिए बड़े स्थानीय बाजार की अनुपस्थिति और मुख्य भूमि से यहाँ कच्चे माल को लाने की आवश्यकता उद्योगों के विकास में मुख्य बाधाएं मानी गयी हैं। इसलिए अंदमान निकोबार द्वीप समूह में बड़ी और मध्यम आकार की औद्योगिक गतिविधि नहीं है। अंदमान निकोबार का औद्योगिक आधार मुख्यतया लघु और अत्यंत लघु उद्योगों से बना है। इस क्षेत्र में मुख्यतया लकड़ी और कृषि आधारित उद्योग ही हैं। हाल के वर्षों में लकड़ी पर आधारित औद्योगिक यूनिटों के बंद हो जाने के कारण औद्योगिक उत्पादन में गिरावट आयी है। मार्च 2010 की समाप्ति पर इस केन्द्र शासित प्रदेश में कुल 1,961 पंजीकृत लघु उद्योग इकाइयाँ हैं (सारणी 5)।

सारणी 4 : अंदमान निकोबार में परिचालनगत जोतों की संख्या, क्षेत्रफल और आकार

आकार वर्ग (हेक्टर)	कृषि सर्वेक्षण 2000-01			कृषि सर्वेक्षण 2005-06		
	जोतोंओं की संख्या	जोतोंओं का क्षेत्रफल	औसत आकार	जोतोंओं की संख्या	जोतोंओं का क्षेत्रफल	औसत आकार
न्यूनतम (1.0 से कम)	3,656 (32.2)	1,431 (6.3)	0.39	4,823 (41.6)	2,140.64 (9.8)	0.44
लघु (1.0 - 2.0)	2,686 (23.7)	3,694 (16.3)	1.38	2,118 (18.3)	3,200.94 (14.7)	1.51
अर्ध-मध्यम (2.0 -4.0)	3,254 (28.7)	8,224 (36.2)	2.53	2,953 (25.5)	7,793.21 (35.7)	2.64
मध्यम (4.0 - 10.0)	1,711 (15.1)	7,374 (32.5)	4.31	1,656 (14.3)	7,199.58 (33.0)	4.35
बड़े (10.0 और अधिक)	42 (0.4)	1,965 (8.7)	46.79	40 (0.3)	1,511.4 (6.9)	37.79
कुल (सभी आकार)	**11,349**	**22,688**	**2.00**	**11,590**	**21,845.77**	**1.88**

टिप्पणी : कोष्ठक में दी गयी संख्याएं प्रतिशत हिस्से को दर्शाती है।

सारणी 5 : अंदमान व निकोबार द्वीप समूह का औद्योगिक परिदृश्य

किस्म / मद	मार्च 2010
बड़े / मध्यम आकार के उद्योग	–
लघु उद्योग	1,961
औद्योगिक केन्द्र	14
औद्योगिक सम्पदा	8
रोजगार	9,106
निवेश (₹ मिलियन में)	234.5
उत्पादन (₹ मिलियन में)	1,806.7

स्रोत : उद्योग विभाग, अंदमान व निकोबार द्वीपसमूह

पर्यटन

अंदमान निकोबार द्वीप समूह में विस्तृत समुद्र-तटों, उन्नत भीतरी भागों और सघन भूमध्य रेखीय वनों का अद्वितीय मेल है। 50 प्रतिशत से अधिक वन्य क्षेत्र जनजातीय आरक्षित क्षेत्र राष्ट्रीय उद्यान और वन्य जीव अभयारण्य से युक्त है। द्वीप पर किसी भी तरह की विकासपरक गतिविधि को, जिसमें पर्यटन भी शामिल है, पर्यावरण संबंधी नाजुक स्थिति के प्रति संवेदनशील होना होगा। अंदमान निकोबार में पर्यटन के विकास के सामने प्रमुख चुनौती सम्बद्धता और उससे जुड़ी आधारभूत संरचना की है ताकि वहाँ प्रवेश अधिक सुगम बनाया जा सके। इस संदर्भ में इस क्षेत्र में आगे भी जारी रखे जा सकने वाले पर्यटन विकास के लिए सार्वजनिक निजी साझेदारी के लिए बहुत अधिक गुंजाइश है। हाल के वर्षों में निजी क्षेत्र ने परिवहन सेवाओं, थियेटर, रेस्तरां और दुकानों को उपलब्ध कराने में अपनी भूमिका को बढ़ाया है। निजी क्षेत्र द्वारा यूनिटों की संख्या और साथ ही रोजगार उपलब्ध कराने में इधर के वर्षों में काफी वृद्धि हुई है। इस रुझान को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

आधारभूत संरचना

इन द्वीपों की भौगोलिक और उष्ण कटबंधीय विशेषताओं के कारण जिसमें समुद्र के कारण लंबी दूरियों तक उत्पन्न पृथकता भी शामिल है, सभी बिजली युक्त द्वीपों के लिए कोई एकल विद्युत-ग्रिड नहीं है, बल्कि किसी क्षेत्र/द्वीप की विद्युत आवश्यकताओं को आत्म निर्भर ढंग से चालित अनेक डीजल जनरेटर सेट पूरा करते हैं। वर्तमान में अंदमान निकाबार द्वीपों में विद्युत की बहुत कमी है। जनसंख्या में निरन्तर हो रही वृद्धि के कारण एक द्वीप से दूसरे तक सामान की आवा-जाही और लोगों के आवागमन की मांग बहुत महत्वपूर्ण हो गयी है। पर्याप्त परिवहन सुविधाओं का न होना इन द्वीपों के आर्थिक विकास में एक बड़ी बाधा है। तथापि, वायु मार्ग के खुलने से व्यापार और पर्यटन को प्रोत्साहन मिल सकता है।

राजकोषीय परिदृश्य

चूंकि अंदमान निकोबार द्वीप समूह बिना विधान सभा वाला केंद्र शासित प्रदेश है, अतः प्राप्तियों और व्यय के लिए सभी आबंटन केंद्रीय बजट से किये जाते हैं। इस केंद्र शासित प्रदेश के राजस्व का प्राथमिक स्रोत कर-रहित रसीदों से उत्पन्न होता है जो कि राजस्व प्राप्तियों का 80 प्रतिशत है। हाल के वर्षों में कर-रहित राजस्वों में निरन्तर वृद्धि होती गयी है। 2007-12 के दौरान राज्य के सकल देशी उत्पाद (जीएसडीपी) में कुल राजस्व प्राप्तियों का अनुपात औसतन 4.7 प्रतिशत रहा है। अंदमान निकोबार द्वीप समूह में जीएसडीपी में कर का अनुपात 1 प्रतिशत से कम था जो सभी राज्यों के अखिल भारतीय औसत 5 प्रतिशत से बहुत कम था। जीएडीपी में राजस्व व्यय अनुपात मुख्यतया छठे वेतन आयोग पंचाट की वजह से बढ़ा है। तथापि, जीएसडीपी में पूंजी परिव्यय अनुपात में गिरावट आयी है (सारणी 6)।

वित्तीय विकास

आर्थिक विकास के बने रहने के लिए एक सुचारू रूप से कार्यरत वित्तीय प्रणाली बहुत महत्वपूर्ण है। रिज़र्व बैंक हालांकि वित्तीय क्षेत्र के विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत रहा है, हाल के वर्षों में उसने औपचारिक वित्तीय क्षेत्र की प्रवेश क्षमता और वित्तीय समावेशन को बढ़ाने के लिए अपने प्रयासों को और भी बढ़ाया है ताकि हमारे समाज में जीवन-स्तर उन्नत हो सके। मैं पहले अंदमान निकोबार द्वीप समूह के वित्तीय ढाँचे की एक मोटी रूप-रेखा प्रस्तुत करना चाहूंगा।

सारणी 6 : प्राप्तियाँ और व्यय

(मिलियन ₹)

मद	2007-08 (आरई)	2008-09 (आरई)	2009-10 (आरई)	2010-11 (आरई)	2011-12 (बीई)
कर राजस्व	214 (0.7)	260 (0.7)	270 (0.7)	360 (0.8)	380 (0.8)
कर-रहित राजस्व	1,186 (4.0)	1,380 (4.0)	1,460 (3.8)	1,790 (4.1)	1,970 (3.9)
कुल राजस्व	**1,400 (4.7)**	**1,640 (4.7)**	**1,730 (4.5)**	**2,150 (4.9)**	**2,350 (4.7)**
राजस्व व्यय	11,410 **(38.2)**	14,800 **(42.5)**	17,990 **(46.8)**	17,830 **(40.4)**	20,090 **(40.0)**
पूंजी व्यय	8,140 **(27.2)**	11,360 **(32.7)**	9,210 **(24.0)**	3,680 **(8.3)**	5,990 **(11.9)**
कुल व्यय	**19,550 (65.4)**	**26,160 (75.2)**	**20,721 (70.8)**	**21,510 (48.8)**	**26,090 (51.9)**

टिप्पणी : 1. कोष्ठक में दी गयी संख्या जीएसडीपी का प्रतिशत है।
2. 2010-11 और 2011-12 के लिए जीएसडीपी का अनुमान पिछली प्रवृतियों पर आधारित है।

स्रोत : 1. केंद्र सरकार के बजट प्रलेख।
2. 2009-10 तक जीएसडीपी आंकड़ों के लिए केंद्रीय सांख्यिकी संगठन।

चार्ट 2 : सीडी अनुपात में ऐतिहासिक प्रवृतियाँ

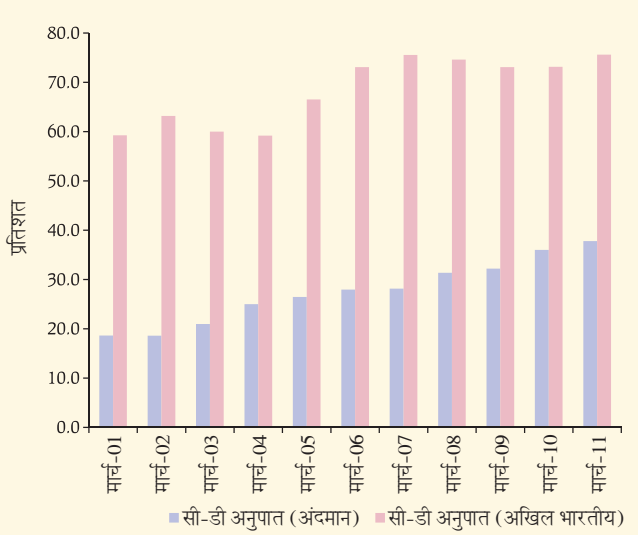

हाल के वर्षों में अंदमान निकोबार द्वीप समूह में बैंकिंग गतिविधियाँ क्रमशः बढ़ती गयी हैं। यह इस बात से देखा जा सकता है कि जून 2002 की समाप्ति पर जहाँ 13,000 प्रति की जन संख्या पर बैंक की एक शाखा थी, वहीं जून 2010 की समाप्ति प्रति 11000 की जनसंख्या पर बैंक की एक शाखा है। बैंकिंग नेटवर्क में अधिकांशतः सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का बाहुल्य है।

अंदमान निकोबार द्वीप समूह में जमाराशियों की वृद्धि दर हाल में अखिल भारतीय स्तर की तदनुरूपी वृद्धि दर की अपेक्षा कम थी। अंदमान निकोबार द्वीप समूह में ऋण-जमा (सी-डी) अनुपात दिसम्बर 2010 की समाप्ति पर 37.6 प्रतिशत था जो कि अखिल भारतीय स्तर पर 76.2 प्रतिशत के अनुपात से बहुत कम था (चार्ट 2 तथा सारणी 7)।

यथा मार्च 2010 की समाप्ति पर समग्र प्राथमिक क्षेत्र अग्रिमों में लगभग 58.3 प्रतिशत अग्रिम लघु उद्यमों ने प्राप्त किये। इसी अवधि के दौरान समग्र प्राथमिक क्षेत्र अग्रिमों में कृषि का अनुपात केवल 8.3 प्रतिशत था। पेशागत ऋण ढांचे में वैयक्तिक ऋणों की

सारणी 7 : जनसंख्या समूह में ऋण-जमा अनुपात

जनसंख्या समूह	दिसं-02	दिसं-06	दिसं-09	दिसं-10	दिसं-02	दिसं-06	दिसं-09	दिसं-10
	अंदमान निकोबार				भारत			
ग्रामीण	23.1	26.0	40.2	39.7	41.5	58.0	57.3	58.5
अर्ध-शहरी	20.0	28.3	33.1	36.9	34.1	52.0	50.5	52.3
शहरी	–	–	–	–	42.4	59.8	58.0	60.8
महानगरीय	–	–	–	–	80.0	89.6	83.1	90.7
कुल	**20.7**	**27.8**	**34.7**	**37.6**	**58.3**	**75.6**	**71.5**	**76.7**

चार्ट 3 : ऋण में पेशागत हिस्सा

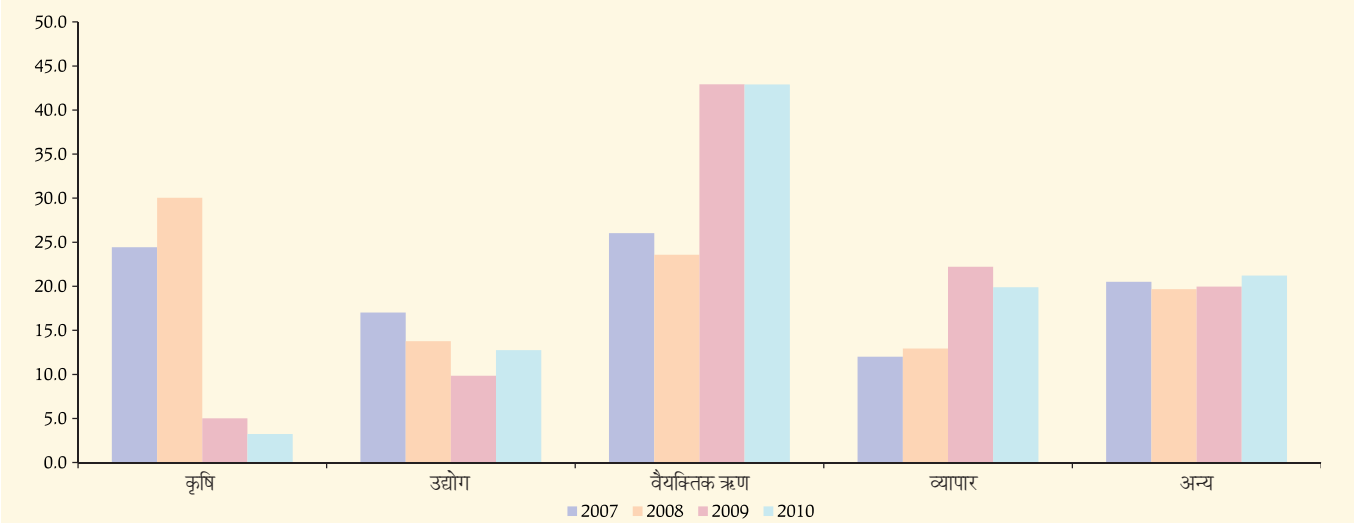

बहुलता रही है और उसके बाद व्यापार और उद्योगों को दिये गये अग्रिमों का क्रम था (चार्ट 3)।

वित्तीय समावेशन

रिज़र्व बैंक द्वारा वित्तीय समावेशन के लिए उठाये गये अभिनव कदमों के संदर्भ में बैंकों को समावेशी कदम उठाने के लिए अधिक सुग्राही बनाया जा रहा है। यह देखा जा सकता है कि 2007 से 2010 की अवधि के दौरान शाखा विस्तार के संदर्भ में बैंकिंग क्षेत्र की प्रगति में गत्यावरोध था हालांकि जमाराशियों और ऋण विस्तार की दृष्टि से सुधार हुआ था। रिज़र्व बैंक द्वारा हाल में उठाये गये अभिनव कदमों के कारण शाखाओं की संख्या 2010 की 37 की संख्या से बढ़कर 2011 में 42 तक पहुँच गयी है। (चार्ट 4)

इसके अतिरिक्त एक समग्र वित्तीय समावेशन योजना के अनुसरण में अंदमान निकोबार के तीन जिलों में 1000 की जनसंख्या वाले 47 गावों को अभिनिर्धारित किया गया है। इनमें से 17 गाँव दक्षिण अंदमान में अभिनिर्धारित किये गये हैं, 21 गाँव उत्तरी और मध्य अंदमान में तथा 9 गाँव निकोबार में अभिनिर्धारित किये गये हैं। जून 2011 की समाप्ति तक अंदमान निकोबार में कुल 37,370 सीमित सुविधा खाते खोले गये हैं।

यथा मार्च 2010 की समाप्ति पर अंदमान निकोबार में कुल 7000 किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) जारी किये गये थे और इस योजना के अन्तर्गत मंजूर ऋण की राशि ₹1.58 बिलियन थी। यथा जून 2011 की समाप्ति पर 1,260 स्वयं सहायता समूहों

चार्ट 4 : अंदमान व निकोबार में बैंकिंग की प्रगति

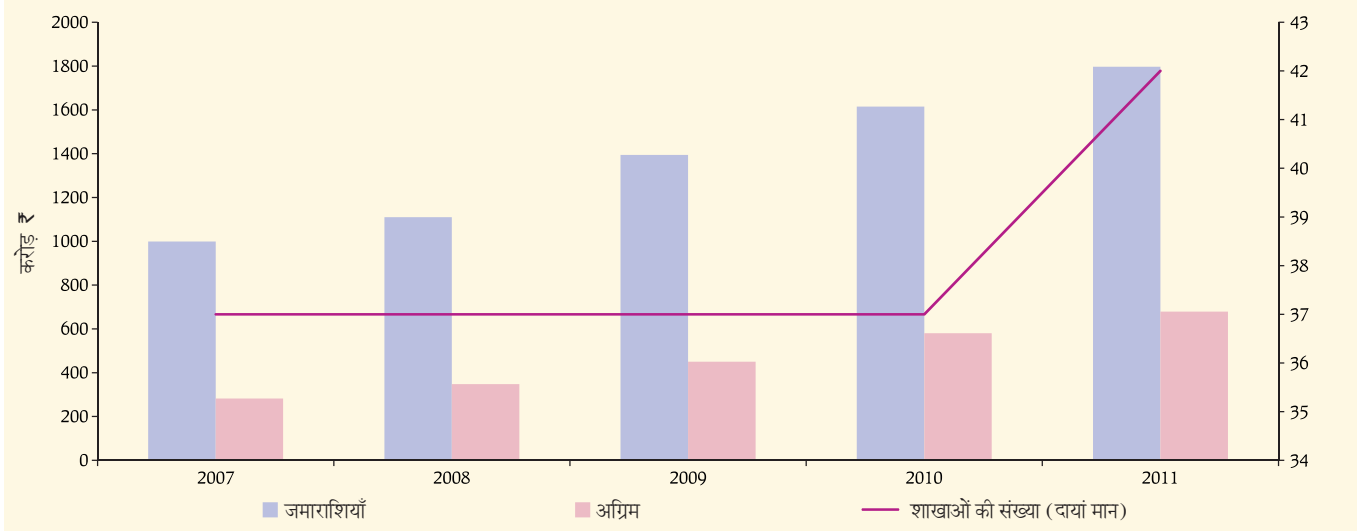

(एसएचजी) को कुल ₹95 मिलियन की राशि संवितरित की गयी थी।

वित्तीय समावेशन के उपाय

समाज के निर्धन और सुविधाहीन वर्गों को बैंकिंग के दायरे में लाने और इस प्रकार एक समतापूर्ण वृद्धि को जन्म देने और उसे बनाये रखने के लिए वित्तीय समावेशन महत्वपर्ण है। वित्तीय समावेशन को बढ़ाने के लिए रिज़र्व बैंक द्वारा उठाये गये विभिन्न कदमों की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

सर्वप्रथम, रिज़र्व बैंक ने बहुत पहले से 'प्राथमिक क्षेत्र उधार' नाम से एक व्यवस्था आरंभ कर रखी है, जिसके मार्फत कुछ प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को जिनमें अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ लघु उद्योग, लघु व्यापार और कृषि भी शामिल हैं, ऋण दिया जाता है। सुधार कार्यक्रमों के बाद की अवधि में प्राथमिक क्षेत्र का विस्तार किया गया है ताकि उसके दायरे में खुदरा व्यापार, शैक्षिक ऋणों, व्यष्टि वित्त, और कम लागत वाले आवास के लिए दिये गये अग्रिमों को भी शामिल किया जा सके। इससे वित्तीय समावेशन का उद्देश्य आगे बढ़ाने में सहायता मिली है।

दूसरे, केंद्रीय वित्त मंत्री ने 2010-11 के बजट में घोषित किया था कि देश में 2000 से अधिक की आबादी वाले प्रत्येक गांव को मार्च 2012 तक बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध हो जानी चाहिए। इस प्रक्रिया को कार्यान्वित करने के लिए वाणिज्यिक बैंकों ने वित्तीय समावेशन की योजनाएं तैयार की है और रिज़र्व बैंक को प्रस्तुत की हैं। चूंकि बहुत छोटे केन्द्रों पर ईंट-गारे वाली शाखाएं खोलना व्यावहारिक नहीं होगा, प्रयास यह है कि इस चुनौती को संचार प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) मॉडेल के द्वारा पूरा किया जाये। इस मॉडेल के अन्तर्गत बैंक अपने एजेंट नियुक्त करते हैं जो कि बैंक की ओर से ग्राहक के दरवाजे पर ही आधारभूत बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं।

तीसरे, रिज़र्व बैंक ने बैंकों को सीमित सुविधा खाते खोलने के आदेश दिये हैं। इन खातों में न्यूनतम शेष की आवश्यकता नहीं होती या बहुत कम होती है और ओवरड्राफ्ट के जरिये छोटे ऋण देने का प्रावधान होता है। छोटे जमाकर्ताओं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र के ऐसे जमाकर्ताओं के लिए यह बहुत सुविधाजनक खाता है।

चौथे, एक आम आदमी के लिए बैंक खाता खोलने में एक बड़ी बाधा 'अपने ग्राहक को जानिये (केवाईसी)' मानदंड रहा है। छोटे खातों, अर्थात् ₹50,000 तक की जमाराशियों और ₹0.1 मिलियन तक के ऋणों के लिए इस मानदंड को शिथिल बनाया गया है। बैंक में खाता खोलने के लिए किसी वर्तमान खातेदार द्वारा सामान्य परिचय कराया जाना अब पर्याप्त है। इस संबंध में, केंद्र सरकार की 'आधार' परियोजनाए जिसका लक्ष्य देश के प्रत्येक नागरिक को एक विशिष्ट पहचान संख्या दिये जाने का प्रावधान है, गरीब व्यक्ति को बैंक के 'केवाईसी' मानदंडों को पूरा करने में अपनी पहचान स्थापित करने में सहायक होगी।

पाँचवे, किसान अब किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) और सामान्य उद्देश्य वाले क्रेडिट कार्डों (जीसीसी) के मार्फत सुविधाजनक तरीके से बैंकों से ऋण ले सकते हैं।

छठा, वित्तीय साक्षरता बहुत महत्वपूर्ण हो गयी है। बहुत सारी बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध होने के बावजूद सामान्य आदमी को उनकी जानकारी नहीं होती। अतः रिज़र्व बैंक ने एक 'वित्तीय साक्षरता परियोजना' आरंभ की है, जिसका उद्देश्य विभिन्न लक्ष्य समूहों को केंद्रीय बैंक और सामान्य बैंकिंग अवधारणाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराना है। हमारी 'वित्तीय शिक्षा' वेबसाइट सभी आयु के बच्चों को बैंकिंग, वित्त और केंद्रीय बैंकिंग के बारे में बुनियादी जानकारी उपलब्ध कराती है। हमारी यह वेबसाइट 13 भाषाओं में भी उपलब्ध है।

अंत में, रिज़र्व बैंक के लिए भी सीखने की एक प्रक्रिया है। हम इसे समझते हैं कि बैंकिंग व्यवस्था के प्रति उत्तरदायी होने के कारण हमें सामान्य मनुष्य की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना होगा। तदनुसार, हमारे गवर्नर डॉ. सुब्बाराव ने हमारे प्लैटिनम जयंती समारोहों के एक हिस्से के रूप में अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर दूसरों तक पहुँचने के कार्यक्रम की शुरुआत की है। दूसरों तक पहुँचने के इस कार्यक्रम के तहत रिज़र्व बैंक का शीर्ष प्रबंधन प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश में राज्य सरकार और वाणिज्यिक बैंक के अधिकारियों के साथ कम से कम एक गाँव का दौरा करता है ताकि वित्तीय समावेशन पर ध्यान केन्द्रित हो सके। ज़मीनी सच्चाइयों को समझने में हमारे लिए यह बहुत समृद्ध करने वाला अनुभव रहा है। तदनुसार, हमने इन कार्यक्रमों को जारी रखने का निर्णय लिया है।

नीतिगत चुनौतियाँ

अब तक चलायी गयी विकासपरक गतिविधियाँ आर्थिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में सरकार की प्रत्यक्ष सहभागिता से ही प्रेरित रही हैं । तथापि, अब एक व्यापक आधारवाली आर्थिक रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें निजी क्षेत्र की भी व्यापक सहभागिता हो।

दूसरे, विकास की दिशा में स्थानीय बाजार का सीमित आकार का होना एक बड़ी बाधा है। केंद्र शासित प्रदेश को मुख्य भूमि को समुद्री उत्पाद, बागबानी और पुष्पोत्पादन जैसे निर्यातों के मामले में, जिसमें इस क्षेत्र को एक नैसर्गिक बढ़त हासिल है, एक अधिक अग्रगामी नीति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

तीसरे, इस द्वीप समूह के पास एक अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) है जो कि देश के ईईजेड का 30 प्रतिशत है और अद्वितीय किस्म की समुद्री सम्पदा और प्रवाल-विविधता से सम्पन्न है। तथापि, इस संसाधन का पर्याप्त दोहन नहीं किया गया है। मुख्य धरती को निर्यात करने के लिए मत्स्य-पालन उद्योग को विकसित करने की आवश्यकता है। इससे न सिर्फ इस केन्द्र शासित प्रदेश की आय में वृद्धि होगी बल्कि परिवहन लागत में भी बहुत कटौती होगी क्योंकि वर्तमान में इन द्वीपों को माल लाने वाले जहाजों को वापसी में मुख्य धरती की ओर खाली लौटना पड़ता है।

चौथे, कृषि पर एक नये सिरे से जोर देने की आवश्यकता है। बागबानी, पुष्पोत्पादन, फसलों की बोवाई, वन-औषधि वाले पौधे और रंगाई की गुणवत्ता से युक्त पौधे संभावित निवेशकों के लिए बहुत सारे अवसर प्रदान कर सकते हैं।

पाँचवें, साक्षरता के उच्च स्तर और भू-भाग की महत्वपूर्ण अवस्थिति को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के लिए यहाँ बहुत अधिक संभावनाएं हैं।

छठे, द्वीपों में पर्यटन की संभावनाओं को उच्च गुणवत्ता किन्तु अल्प मात्रा वाले पर्यावरण केन्द्रित पर्यटन के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है।

सातवें, ग्रेट निकोबार द्वीप सिंगापुर/कोलंबो के बीचोंबीच स्थिति है और दक्षिण पूर्व एशिया और उसके आगे जाने वाले समुद्री परिवहन मार्ग के ठीक उत्तर में है। यह अत्यंत व्यस्त मार्ग है और विश्व के वाणिज्यिक परिवहन का एक बहुत बड़ा हिस्सा इस इलाके से गुजरता है। इस मार्ग से गुजरने वाले समुद्री माल वाहनों के रख-रखाव, और अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय जहाजों से जुड़ी बंकर गतिविधियों और तेल दोबारा भरने के जैसे कार्यों के लिए इन द्वीपों में असाधारण आर्थिक व रणनीतिगत संभाव्यता है।

आठवें, आर्थिक गतिविधियों के बढ़ने के साथ-साथ निवेश की मांग भी बढ़ सकती है। निजी निवेश और उद्यमों को सहायता देने में बैंकों को और अधिक सक्रिय होना होगा। बैंकिंग की गतिविधियाँ बढ़ने के साथ यहाँ ऋण-जमा के वर्तमान निम्न अनुपात को बढ़ाने में भी सहायता मिलेगी।

निष्कर्ष

अंदमान और निकोबार द्वीपों का देश की मुख्य धरती से तुलनात्मक रूप से अलग-अलग रहना, विच्छिन्न भू-दृश्य, कठिन संचार व्यवस्था, निविष्टियों की आपूर्ति के लिए सरकारी विभागों पर अत्याधिक निर्भरता और स्थानीय बाजार का बहुत छोटा होना ऐसी प्रमुख बाधाएं हैं जिनके कारण यहाँ की अर्थ-व्यवस्था का तेजी से विकास नहीं हो पाया है तथापि, अंदमान निकोबार द्वीप समूह में मुख्यतया प्रचुर समुद्री संसाधनों, साक्षरता की ऊँची दर, प्रेरक कार्य वातावरण और महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति के कारण ऊँची विकास दर को हासिल करने की अतिशय संभाव्यता है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकारी प्रयासों के साथ पूरक हिस्से के रूप में निजी क्षेत्र की ओर से भी कदम उठाये जाने चाहिए और इसमें बैंकिंग क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इससे इन द्वीपों के जन साधारण की खुशहाली और बढ़ सकेगी।